International Journal of Jyotish Research: 2018; 3(2): 28-31

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2018; 3(2): 28-31
© 2018 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 21-05-2018
Accepted: 25-06-2018

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत।

Correspondence
डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत।

ज्योतिषशास्त्र में वर्णित सन्तान योग विचार

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी

सारांश
ज्योतिषशास्त्र अनादिकाल से समस्त चराचर प्राणी को कालानुरोधेन प्रभावित करता रहा है। भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में वर्णाश्रम के अन्तर्गत ' गृहस्थाश्रम ' को प्रमुख माना गया है, जिसमें मनुष्य विवाहोपरान्त प्रवेश करता है। तत्पश्चात् ही सन्तान (अपत्य) सुख का विषय आरम्भ हो जाता है। पूर्व में तो कतिपय आचार्यों द्वारा विवाह का मुख्य उद्देश्य 'सन्तानोत्पत्ति' ही बताया जाता रहा है। दाम्पत्य जीवन का एक अभिन्न अंग है – सन्तान। पुराणों में ऐसा वर्णन है कि 'पुं' नामक नरक से उद्धार हेतु मनुष्य को पुत्र की आवश्यकता होती है। विदित हो कि सन्तान का तात्पर्य केवल पुत्र से नहीं, अपितु पुत्री से भी है। ज्योतिषशास्त्र के विविध ग्रन्थों में 'सन्तान विचार' का उल्लेख मिलता है। सम्प्रति समाज का प्रमुख विषय है- सन्तान। आज इसकी प्राप्ति हेतु आधुनिक विज्ञान द्वारा भी नवीन-नवीन प्रक्रिया विधि (सरोगेसी आदि) दिखलाई पड़ रहे हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में ज्योतिषशास्त्र के अन्तर्गत 'सन्तान का विचार' कहाँ से किया जाता है? किन-किन परिस्थितियों में 'सन्तान योग' होता है अथवा नहीं? सन्तान विचार के लिए कौन-कौन से घटक प्रमुख है? पुत्र होगा अथवा पुत्री ? सन्तान योग के परिहार पक्ष आदि समस्त विषयों का मैं उल्लेख करने जा रहा हूँ।

कूट शब्द – अनादिकाल, अपत्य योग, गृहस्थाश्रम, अनपत्य योग, सन्तानोत्पत्ति, परिहार।

प्रस्तावना
ज्योतिषशास्त्रोक्त सन्तानोत्पत्ति की जिज्ञासा के अन्तर्गत विदित हो कि जन्मकुण्डली में 'पंचम भाव' से सन्तान का विचार किया जाता है, किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य कई विचार भी इस भाव से किये जाते हैं। जैसा कि जातकाभरण में वर्णित निम्न श्लोक में उद्धृत है –

बुद्धिप्रबन्धात्मजमन्त्रविद्या विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्था:।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञै: परिचिन्तनीया:।।[1]

अर्थात् पंचम भाव से बुद्धि, प्रबन्ध, सन्तान, मन्त्रविद्या का लाभ, विनय और गर्भस्थिति आदि का सुविज्ञ ज्योतिर्विद विचार करते हैं। ज्योतिषशास्त्र में सन्तान को 'अपत्य' कहा जाता है। 'सुत' भी सन्तान अर्थ में ही विज्ञ है।
सन्तान विचार हेतु जन्मकुण्डली में निम्नलिखित तथ्यों का विचार आवश्यक है –
1. पंचम भाव 2. पंचम से पंचम भाव 3. पंचमेश एवं नवमेश की स्थिति 4. पंचम भाव पर-शुभग्रहों की दृष्टि
5. लग्न विचार 6. पंचम भाव पर पापग्रहों की दृष्टि 7. नवमांश में पंचमेश -की स्थिति 8. संतान कारक विचार

गणेशकवि द्वारा विरचित ज्योतिषशास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ 'जातकालङ्कार' में वर्णित 'सन्तान योग' का विचार यहाँ सर्वप्रथम कर रहा हूँ –

किंचित्कालं विलम्ब: शुभखगसहितास्तेऽथ कर्के सुतर्क्षे।
चन्द्रे कन्या प्रजावान्प्रमिततनयवांश्चाथ देवेन्द्रपूज्यात्।।
क्रूरश्चेत्पंचमस्थो गुरुरपिसुतग: स्यात्तदापत्यहीन:।
छायापुत्र: स्वगेहाद्यदि भवति सुते सुनूरेकस्तदानीम्।।[2]

अर्थात् लग्न का स्वामी लग्नेश- पंचम स्थान का स्वामी पंचमेश एवं नवम स्थान का स्वामी नवमेश यदि शुभग्रहों (पूर्ण-चन्द्र,

बुध, शुक्र तथा गुरु) से युक्त हों तो सन्तान प्राप्ति में विलम्ब होता है। पंचम भाव में स्वराशि का चन्द्रमा रहे तो कन्या सन्तति या अल्प सन्तति होती है जिसमें पुत्र की संख्या कम होती है। पंचम भाव में वृहस्पति हो और इससे पंचम स्थान (नवम) में कोई पापग्रह हो तो सन्तान का अभाव होता है। यदि शनि अपनी राशि मकर-कुम्भ से पंचम स्थान में रहे तो एक पुत्र होता है।
अपि च –

कुम्भे चेत्पञ्च पुत्रास्तदनु च मकरे नन्दनेप्यात्मजा: स्यु:।
तिस्रोभौम: सुतानां त्रितयमथ सुतादायको रोहिणेय:॥
इत्थं काव्य: शशांको जनुषि च गुरुणा केवलेनैव पुत्रा:।
पंचस्यु: केतुराव्हो: क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्ब:॥[३]

अर्थात् पंचमभाव में यदि शनि कुम्भराशि का रहे तो पाँच पुत्र होते हैं। पंचम भाव में यदि शनि मकर राशि का हो तो तीन पुत्रियाँ होती हैं। पंचम भाव में मकर राशि का मंगल रहे तो तीन पुत्र होता हैं। पंचम भाव में बुध-शुक्र या चन्द्र हों तो कन्या सन्तति होती है। पंचम भाव में एकाकी वृहस्पति यदि हो तो पाँच पुत्र होते हैं। पंचम भाव में यदि मेष-वृष या कर्क राशि हो और उसमें राहु या केतु रहे तो शीघ्र सन्तान प्राप्ति होती है।

स्पष्ट जन्मांग चक्रम् –

पाँच पुत्र वाली कुण्डली

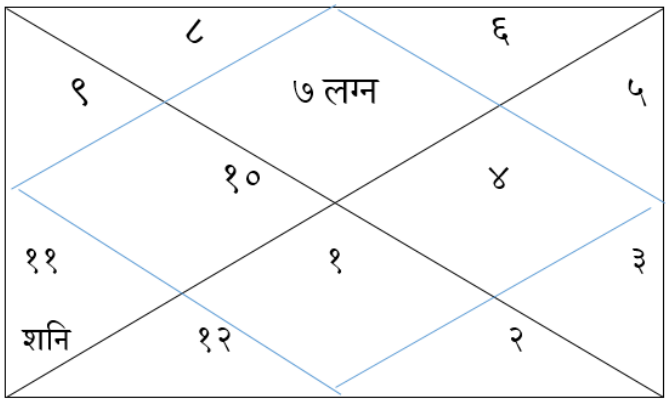

सन्तान विलम्बकारक योग –

पापो वा वासवेज्य: सुखभवनगत: पंचमेवाऽष्टमे वा।
शीतांशु: सन्तते: स्यात्खगुणमितसमातुल्य एव प्रबन्ध:॥
यावन्त: पापखेटास्तनयगृहगता: सौम्यदृष्ट्या वियुक्ता
स्तावद्वर्षप्रमाणो नियतमिह भवेत्संततेर्वा विलम्ब:॥[४]

अर्थात् चतुर्थ भाव में पापग्रह या वृहस्पति हो और चन्द्रमा पंचम या अष्टम भाव में हो तो सन्तान प्राप्ति में ३० वर्ष का विलम्ब होता है। पंचम भाव में शुभग्रह की दृष्टि से वंचित जितने पापग्रह रहें उतने वर्ष तक निश्चित रुप से सन्तान की प्राप्ति में विलम्ब होता है।

परिहार –

तत्प्राप्तिर्धर्ममूला तदनु बुधकवी शंकरस्याभिषेका।
श्चन्द्रश्चेत्तद्वदेव त्रिदिवपतिगुरुर्मन्त्रयन्त्रौषधीनाम्॥
सिद्धया मन्दारसूर्या यदि शिखितमसी तत्र वंशेशपूजा।
कार्याऽऽम्नायोक्तरीत्या बुधगुरुनवपा: क्षिप्रमेवात्रसिद्धि:॥[५]

अर्थात् सन्तति प्राप्ति धर्माचरण से होती है। सन्तति प्राप्ति यदि बुध-शुक्र या चन्द्र प्रतिबन्धक हों तो शिव अभिषेक करने कराने से, वृहस्पति प्रतिबन्धक हों तो मन्त्र-यन्त्र और औषधि प्रयोग से, शनि-भौम या राहु-केतु प्रतिबन्धक हों तो वैदिक विधि से अपने वंशेश (कुलदेवता) की पूजा अर्चना करने से, बुध-गुरु या नवमेश प्रतिबन्धक हों तो अनुष्ठानादि से शीघ्र ही सन्तान प्राप्ति होती है। यहाँ नवमेश या गुरु के प्रतिबन्धक होने पर पार्वती का अनुष्ठान बतलाया गया है।
ज्योतिषशास्त्र में 'सन्तान विचार' अथवा पंचम भाव के लिए आचार्य जीवनाथकृत 'भावकुतूहल' नामक ग्रन्थ भी ज्योतिर्विदों द्वारा अति महत्वपूर्ण माना जाता है। ग्रन्थ के सन्तानभावविचार में उन्होंने लिखा है कि –

नन्दनाधिपतिना युतेक्षितं नन्दनं शुभनभोगसंयुतम्।
नन्दनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन न हि नन्दनागम:॥[६]

अर्थात् पंचमेश पंचमभाव में स्थित हो अथवा उस पर पंचमाधीश की दृष्टि हो तथा पंचम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही सन्तानसुख का लाभ जातक को होता है। इसके विपरीत परिस्थितियों में, अर्थात् यदि पंचम भाव पंचमाधिपति से युत-दृष्ट न हो और पंचम भाव पापाक्रान्त हो, तो जातक सन्ततिसुख से वंचित रहता है।
अन्य योग –

अंगाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुत: स्यात्।
सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतो वेति सुतश्च कन्या॥[७]

अर्थात् लग्न के स्वामी लग्न, तृतीय या द्वितीय भाव में स्थित हों, तो जातक को प्रथमत: पुत्र और बाद में कन्या की प्राप्ति होती है। लग्न के स्वामी यदि चतुर्थ भाव में स्थित हों तो प्रथमत: कन्या और बाद में पुत्र का लाभ होता है अथवा यमल – एक पुत्र और एक कन्या का जन्म होता है।

जातकाभरण में भी इसके समतुल्य कहा गया है –

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथ: प्रथम: सुत: स्यात्।
तुर्ये स्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीय: पुत्री सुतो वेति पुर: प्रकल्प्यम्॥[८]

सन्तान संख्या विचार –

यावन्मितानामिह पुत्रभावे नरग्रहाणामिह दृष्टय: स्यु:।
तावन्त एवास्य भवन्ति पुत्रा: कन्या मिति: स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या॥[९]

अर्थ यह है कि पंचम भाव पर जितने पुरूषग्रहों की दृष्टि होती है उतने पुत्र और जितने स्त्रीग्रहों की दृष्टि होती है उतनी कन्यायें जातक को प्राप्त होती है। पंचम भाव के ये योगकारक द्रष्टा ग्रह यदि स्वगृह अथवा उच्चादि बल से युक्त हो तो सन्तति संख्या को द्विगुणित और त्रिगुणित समझना चाहिए।
महर्षि पराशर जी ने अपने ग्रन्थ 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' में सन्ततिसंख्या के अनेक निर्णायक योग दिये है, जिनमें से कुछ की चर्चा यहाँ करते है -

चतुर्थे पापसंयुक्ते षष्ठे चैव तथैव हि।
सुतेशे परमोच्चस्थे लग्नेशेन समन्विते॥
कारके शुभसंयुक्ते दशसंख्यास्तु सूनव:॥[१०]

आशय यह है कि चतुर्थ और षष्ठ भावों में पापग्रह स्थित हों तथा पंचम भाव के स्वामी अपनी परमोच्च स्थिति में लग्नेश से संयुक्त हो तथा पंचम भाव का कारक ग्रह वृहस्पति यदि शुभ ग्रहों से युत हो, तो जातक को दस (१०) सन्तानें होती हैं।
अपि च –

पञ्चमात्पञ्चमे मन्दे सुतस्थे च तदीश्वरे।
सूनव: सप्तसंख्याश्च द्विगर्भे यमलं भवेत्।।
वित्तेशे पंचमस्थे च सुतस्थे पंचमाधिपे।
षट्संख्या च सुतप्राप्तिस्तेषां च त्रिप्रजा मृति:।।
लग्नात्पंचमे जीवे जीवात्पंचमगे शनौ
मन्दात्पंचमगे राहौ पुत्रमेकं विनिर्दिशेत्।।[११]

नवम भाव में शनि, नवमाधिपति यदि पंचम भाव में गया हो, तो उसके सात संतानें होती हैं, जिसमें दो सन्तानें जुड़वाँ होती हैं। द्वितीय भाव का स्वामी पंचम भाव में, पंचमेश पंचम भाव में स्वगृही होकर यदि स्थित हो तो जातक को छ: पुत्रों की प्राप्ति होती है, जिसमें तीन की मृत्यु हो जाती है।
लग्न से पंचम भाव में वृहस्पति, वृहस्पति से पंचम भाव (नवम भाव) में शनि और शनि से पंचम भाव (लग्न में) राहु स्थित हो, तो जातक को मात्र एक पुत्र होता है।

अनपत्य (सन्तान हानि) योग –

सहजभावपति: सहजे यदा तनुगतो धनगो व्ययगोऽपि वा।
सुतगत: सुतहानिकरो नृणां बुधवैरुदितो मिहिरादिभि:।।
शुक्रांगारनिशाकरा द्वितनुगा: सन्तानसौख्यं नृणा।
मादौ संजनयन्ति जन्मसमये चापं विना प्रायश:।।
मीने वा धनुषि प्रमाणपटव: सन्तानभावे यदा।
सन्तानं न तदामनन्ति विबुधा: पुंसां विशेषादिह।।[१२]

अर्थात् सहज भाव का स्वामी यदि लग्न, द्वितीय, तृतीय, व्यय या पंचम भाव में स्थित हो तो वह जातक के सन्तानभाव की हानि करता है। जन्मकाल में शुक्र, भौम और चन्द्रमा, धनु के अतिरिक्त अन्य द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या और मीन) राशियों में स्थित होकर पंचम भाव में स्थित हो तो जातक को सन्तानसुख होता है। यदि वे धनु राशि के होकर पंचम भाव में स्थित हों तो जातक सन्तानसुख से हीन होता है। पंचम भाव में वृहस्पति की राशि ९/१२ हो तो भी दैवज्ञों द्वारा अनपत्यता ही कही गयी है।

आचार्य वैद्यनाथ जी ने स्वरचित ग्रन्थ ष्जातकपारिजातष् में सन्तान भाव का विचार करते हुए लिखा है कि-

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे।
पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीन:।।[१३]

इसका तात्पर्य है कि लग्न से पंचम भाव में चन्द्रमा या शुक्र का वर्ग हो और वह चन्द्रमा या शुक्र से युत या दृष्ट हो तथा उसमें पापग्रह न हों तो जातक को अनेक पुत्र होते हैं। किन्तु यदि उक्त पंचम भाव पर शनि या मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन होता है।

अपिच-

पुत्रस्थाने तदीशे वा गुरौ वा शुभवीक्षिते।
शुभग्रहेण संयुक्ते पुत्रप्राप्तिर्न संशय:।।
लग्नेशे पुत्रभावस्थे पुत्रेशे बलसंयुते।
परिपूर्णबले जीवे पुत्रप्राप्तिर्न संशय:।।
पुत्रस्थानगते जीवे परिपूर्णबलान्विते।
लग्नाधिपेन सन्दृष्टे पुत्रप्राप्तिर्न संशय:।।[१४]

अर्थात् यदि पंचम भाव, पंचमेश अथवा वृहस्पति शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक निश्चय ही पुत्रवान् होता है। यदि लग्नेश पंचम भाव में हो, पंचमेश बलवान हो तथा वृहस्पति भी पूर्ण बली हो तो जातक को निश्चय ही पुत्रलाभ होता है। पूर्ण बलसम्पन्न वृहस्पति यदि पंचम भाव में लग्नेश द्वारा देखा जाता हो तो नि:सन्देह ही पुत्र प्राप्ति होती है।

जातक पारिजात के अनुसार सन्तानहानि विचार–

दशमे शीतगुर्द्यूने भृगुज: पापिन: सुखे।
तस्य सन्ततिविच्छेदो भविष्यति न संशय:।।[१५]

जिसके दशम भाव में चन्द्रमा, सप्तम भाव में शुक्र और चतुर्थ भाव में पापग्रह स्थित हों तो उसकी सन्तति विनष्ट हो जाती है। इसके समतुल्य आचार्य मन्त्रेश्वर भी अपने ग्रन्थ फलदीपिका में कहते हैं –

सुखास्तदशम स्थितैरशुभकाव्यशीतांशुभि।
र्व्ययाष्टतनयोदयेष्वशुभगेषु वंशक्षय:।।
मदे कविविदौ मतौ गुरुरसद्भिरम्बुस्थितै:।
सुते शशिनि नैधनव्ययतनुस्थपापैरपि।।

दत्तक पुत्र योग –

पुत्रस्थानगत: कश्चित्परिपूर्णबलान्वित:।
अदृष्ट: पुत्रनाथश्चेत् तदा दत्तादय: सुता:।।[१६]

कोई एक पूर्ण बलवान् ग्रह पंचम भाव में स्थित हो तथा पंचम भाव का स्वामी अन्य किसी ग्रह से अदृष्ट हो तो जातक को दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

अपिच-

पापक्षेत्रगते चन्द्रे पुत्रेशे धर्मराशिगे।
दत्तपुत्रस्य सम्प्राप्तिलग्नेशस्तु त्रिकोणग:।।[१७]

अर्थात् चन्द्रमा यदि पापराशि में स्थित हो, पंचमेश नवम भाव में और यदि लग्नेश भी पंचम या नवम भाव में स्थित हो तो जातक को दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।
ज्योतिष शास्त्र के फलित स्कन्ध का प्रमुख ग्रन्थ 'फलदीपिका' के पंचमभावफल में लिखा है कि –

जीवेन्दुक्षितिजस्फुटैक्यभवने युग्मे च युग्मांशके।
स्त्रीणां क्षेत्रबलं वदन्ति सुतदं मिश्रे प्रयासात्फलम्।।
भावस्वच्चुक्रगुरुस्फुटैक्यभवनेऽप्योजांशकेऽप्योजभे।
पुंसां बीजबलं सुतप्रदमिमं मिश्रे तु मिश्रं वदेत्।।

अर्थात् स्त्री के जन्मांग चक्र में वृहस्पति, भौम और चन्द्रमा के स्पष्ट राश्यादि भोगों के राश्यादि योग यदि समराशि और समराशि के नवमांश में हो तो स्त्री में पुत्रोत्पत्ति की पूर्ण क्षमता होती है। उक्त योग यदि मिश्र हो अर्थात् राशि और नवमांश सम-विषम हों तो सप्रयास पुत्रोत्पत्ति सम्भव होती है। पुरुष के जन्मांग में सूर्य, वृहस्पति और शुक्र के स्पष्ट राश्यादि भोगों का योग पुरुष की सन्तानोत्पत्ति क्षमता का निर्णायक होता है। उक्त योग यदि विषम राशि और विषम राशि का नवमांश हो तो मनुष्य सहज भाव से पुत्र उत्पन्न करने में सक्षम होता है। राशि और नवमांशराशियों में यदि एक सम हो तो सप्रयास पुत्रजन्म की सम्भावना होती है।

यमल (जुड़वा) जन्म योग

युग्मे चन्द्रसितौ तथौजभवने स्युर्ज्ञारजीवोदया:।
लग्नेन्दू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिन:।।
कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान्द्रयड्गाशकान्पश्यति।
स्वांशे ज्ञे त्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं त्वमिश्रै: समम्।।[१८]

अर्थात् चन्द्रमा और शुक्र यदि समराशि में और विषम राशि के लग्न में बुध, मंगल और वृहस्पति हों तो मिथुन (एक पुत्र और एक कन्या) का जन्म होता है।
लग्न और चन्द्रमा यदि सम राशि के हों और पुरूष ग्रह सूर्य, मंगल और वृहस्पति उनको देखते हों तो दोनों पुत्र (जुड़वा) का जन्म होता है।

सन्तान दोष कारण तथा निवारण बोधक चक्र

सन्तान दोष में कारण ग्रह	प्रभाव	निवारण
राहु, सूर्य, भौम और शनि	कुलदेवता	कुलदेवता के प्रसन्नार्थ पूजन-अर्चन
बुध एवं शुक्र	अनपत्यता	शिवार्चन
चन्द्रमा एवं वृहस्पति	अनपत्यता	यन्त्र, मन्त्र और औषधि का प्रयोग
राहु	अनपत्यता	कन्यादान करना से
सूर्य	अनपत्यता	विष्णु की आराधना से
केतु	..	कपिला गौ का दान करने से
भौम	..	षडङ्ग रूद्राभिषेक करने से

परिहार पक्ष –

सर्वदोषविनाशाय सन्तानहरिपूजनम्।
कुर्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नर:।।[१९]

सन्तान गोपाल का अनुष्ठान, भौमव्रत तथा कामदेव व्रत आदि शास्त्रोक्त आचरण से अनपत्यता का निवारण होकर मनुष्य सन्तानसुख प्राप्त कर सकता है। वंशवृद्धिकवच का पाठ तथा पुत्रकामेष्टि यज्ञ भी सन्तान प्राप्ति में सिद्धिप्रद होता है।

सन्दर्भ

1. जातकाभरण – पंचमभावफलाध्याय:।
2. जातकालङ्कार: - भावाध्याय:, श्लोक संख्या -१३
3. जातकालङ्कार: - भावाध्याय:, श्लोक संख्या – १४
4. जातकालङ्कार: - भावाध्याय:, श्लोक संख्या – १५
5. जातकालङ्कार: - भावाध्याय:, श्लोक संख्या – १६
6. भावकुतूहल - अध्याय-६, सन्तानभावविचार, श्लोक संख्या – १
7. भावकुतूहल – सन्तानभावविचार, श्लोक संख्या -२
8. जातकाभरण – सन्तानभावविचार:।
9. भावकुतूहल – अध्याय -६, सन्तानभावविचार, श्लोक संख्या – ३
10. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - पंचमभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या – २४,२५
11. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - पंचमभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या – २७,२८,२९,३०
12. भावकुतूहल – अध्याय -६, सन्तानभावविचार, श्लोक संख्या – ४,५
13. जातकपारिजात – पंचम-षष्ठभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या – १०
14. जातकपारिजात – पंचम-षष्ठभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या – १६,१७,१८
15. जातकपारिजात – पंचम-षष्ठभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या - २०
16. जातकपारिजात – पंचम-षष्ठभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या – ३८
17. जातकपारिजात – पंचम-षष्ठभावफलाध्याय:, श्लोक संख्या – ३९
18. जातकपारिजात – वियोनिजन्माध्याय:, श्लोक संख्या – २४
19. भावकुतूहल - अध्याय -६, सन्तानभावविचार, श्लोक संख्या – २०